मेरा मास्क आपकी रक्षा करता है,

सभी के लिए मास्क
आपका मास्क मेरी रक्षा करता है

सच कहने की ताकत

जालंधर ब्रीज

साप्ताहिक समाचार पत्र

WASH YOUR HANDS
FREQUENTLY
WITH SOAP AND WATER

• JALANDHAR BREEZE • WEEKLY • YEAR-2 • 27 JANUARY TO 2 FEBRUARY 2021 • VOLUME- 27 • PAGES- 4 • RATE- 3/- • www.jalandharbreeze.com • RNI NO.:PUNHIN/2019/77863

Lic No : 933/ALC-4/LA/FN:1184
INNOVATIVE TECHNO INSTITUTE
CONSULTING DESIGN TRAINING
ISO CERTIFIED 2015 COMPANY

STUDY, WORK & SETTLE IN ABROAD
Low Filing Charges &
*Pay money after the visa
IELTS | STUDY ABROAD

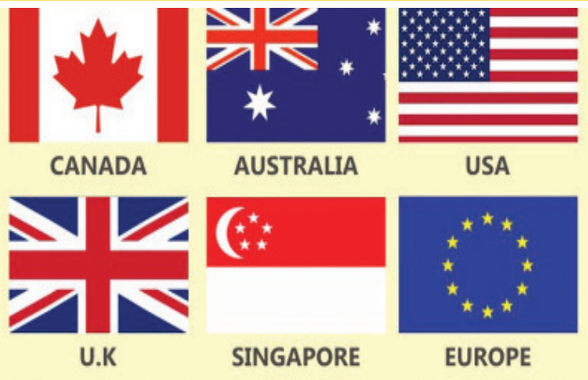

E-mail : ankush@innovativetechin.com • hr@innovativetechin.com • Website : www.innovativetechin.com • FB/Innovativetechin • Contact : 9988115054 • 9317776663
REGIONAL OFFICE : S.C.O No. 10, Gopal Nagar, Near Batra Palace, Jal. • HEAD OFFICE : S.C.O No. 21-22, Kuldip Lal Complex, Highway Plaza, GT Road, Adjoining Lovely Professional University, Phagwara.
*T&C apply

दिल्ली में हिंसा के लिए गृह मंत्री जिम्मेदार, प्रधानमंत्री बर्खास्त करें : कांग्रेस

■ नई दिल्ली/ब्यूरो

कांग्रेस ने किसानों की ट्रैक्टर परेड के दौरान हुई हिंसा को लेकर बुधवार को आरोप लगाया कि यह एक 'सुनियोजित साजिश' थी और इसके लिए गृह मंत्री अमित शाह जिम्मेदार हैं। पार्टी के मुख्य प्रवक्ता रणदीप सुरजेवाला ने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को गृह मंत्री को तत्काल बर्खास्त करना चाहिए।

कांग्रेस के इस आरोप पर फिलहाल भाजपा या सरकार की तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। सुरजेवाला ने संवाददाताओं से कहा, ''देश की राजधानी में किसान आंदोलन की आड़ में हुई सुनियोजित हिंसा व अराजकता के लिए सीधे-सीधे गृहमंत्री अमित शाह जिम्मेदार हैं। इस संबंध में तमाम खुफिया इनपुट के बावजूद हिंसा के तांडव को रोक पाने में नाकामी के चलते उन्हें एक पल भी अपने पद पर बने रहने का हक नहीं है।'' उन्होंने दावा किया, ''साल भर के भीतर दिल्ली में दूसरी बार हुई इस हिंसा को रोक पाने में बुरी तरह विफल रहने वाले अमित शाह को उनके पद से फौरन बर्खास्त किया जाना चाहिए। यदि प्रधानमंत्री अब भी उन्हें बर्खास्त नहीं करते तो इसका मतलब साफ है कि उनकी अमित शाह से प्रत्यक्ष मिलीभगत है।'' सुरजेवाला ने कहा, ''आज़ादी के 73 सालों में यह पहला मौका है, जब कोई सरकार लाल किले जैसी राष्ट्रीय धरोहर की सुरक्षा करने में बुरी तरह नाकाम रही। किसानों के नाम पर साज़िश के तहत चंद उपद्रवियों को लाल किले में घुसने दिया गया और दिल्ली पुलिस कुर्सियों पर बैठी आराम फरमाती रही।'' उन्होंने आरोप लगाया, ''भाजपा के करीबी दीप सिद्धू की पूरे समय लाल किले में मौजूदगी किसान आंदोलन को बदनाम करने की सुनियोजित साजिश है।'' कांग्रेस नेता ने यह आरोप भी लगाया, ''अमित शाह के इशारे पर दिल्ली पुलिस ने उपद्रवियों की अगुआई कर रहे दीप सिद्धू व उनके गैंग की बजाय संयुक्त किसान मोर्चे के नेताओं के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करके उपद्रवियों के साथ भाजपा

सरकार की मिलीभगत व साजिश को खुद ही बेनकाब कर दिया है।'' सुरजेवाला ने दावा किया, ''मोदी सरकार जब उन्हें 'बलपूर्वक' नहीं हटा पाई, तो छलपूर्वक हटाने का षडयंत्र करने लगी।

पहले 'प्रताड़ित करो और परास्त करो' की नीति, फिर मीटिंग पर मीटिंग कर 'थका दो और भगा दो' की नीति, फिर किसानों में 'फूट डालो और आंदोलन तोड़ो' की नीति और अब अंतिम छल है, अराजकता का आरोप लगा 'बदनाम करो और बाहर करो' की नीति।''

उन्होंने सवाल किया, ''सवाल यह है कि जो किसान 63 दिन से शांतिपूर्ण आंदोलन कर रहे थे, अचानक से ऐसा क्या हुआ, जो वो इतना बिफर गए? केवल 30 से 40 ट्रैक्टर लेकर उपद्रवी लाल किले में कैसे घुस पाए? यह किसकी असफलता है? इसका जिम्मेदार कौन है?'' कांग्रेस नेता ने यह भी पूछा, '' 500-700 हिंसक तत्व जबरदस्ती लाल किले में कैसे घुस सकते हैं? जो दीप सिद्धू प्रधानमंत्री मोदी और गृहमंत्री अमित शाह के साथ फोटो खिंचवा बैठक साझा करता है, उसे और उसके समर्थकों को लाल किले तक जाने की अनुमति किसने दी?'' कांग्रेस महासचिव ने सवाल किया, '' किसानों को हिंसा ही करनी होती तो वो 63 दिन से हाड़ कंपकपाती सर्दी में दिल्ली की सीमाओं पर लाखों की संख्या में क्यों बैठते? गुप्तचर एजेंसियों से लेकर गृह मंत्रालय तक क्या कर रहा था?''

उन्होंने पूछा, '' क्या हिंसा का वातावरण बना कर यह सब किसान आंदोलन को बदनाम करने की साजिश नहीं? क्या यह दिल्ली दंगों, शाहीन बाग, सीएए विरोधी प्रदर्शनकारियों, जेएनयू दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकरण की पुनरावृत्ति तो नहीं?'' सुरजेवाला ने केंद्र सरकार से फिर आग्रह किया कि वह तीनों कृषि कानूनों को निरस्त करे।

ट्रैक्टर परेड में हुई हिंसा से कमजोर पड़ा किसान आंदोलन, 1 फरवरी को होने वाला संसद मार्च स्थगित

■ नई दिल्ली/ब्यूरो

किसानों की ट्रैक्टर परेड के दौरान हुयी हिंसा पर स्वराज इंडिया के नेता योगेंद्र यादव ने कहा लाल किला की घटना पर हमें खेद है और हम इसकी नैतिक जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं। दर्शन पाल ने कहा कि तीस जनवरी को देश भर में आम सभाएं व भूख हड़ताल आयोजित की जाएंगी, हमारा आंदोलन जारी रहेगा। गणतंत्र दिवस के दिन किसानों द्वारा निकाले गए ट्रैक्टर परेड में हुए हिंसा के बाद अब किसान आंदोलन कमजोर पड़ता दिखाई दे रहा है। इस हिंसा का असर यह हुआ है कि किसान नेताओं के तेवर बदल रहे है। इतना ही नहीं, 1 फरवरी को बजट पेश किए जाने के दिन किसानों के संसद मार्च की योजना भी रद्द हो गई है। किसान नेता दर्शन पाल ने कहा कि प्रति रैली सरकारी साजिश से प्रभावित हुई।

एक फरवरी को बजट पेश किए जाने के दिन संसद मार्च की योजना रद्द कर दी गयी है। किसानों की ट्रैक्टर परेड के दौरान हुयी हिंसा पर स्वराज इंडिया के नेता योगेंद्र यादव ने कहा लाल किला की घटना पर हमें खेद है और हम इसकी नैतिक जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं। दर्शन पाल ने कहा कि तीस जनवरी को देश भर में आम सभाएं व भूख हड़ताल आयोजित की जाएंगी, हमारा आंदोलन जारी रहेगा। किसान नेता शिवकुमार कक्का ने हिंसा के संबंध में कहा हमारे पास वीडियो क्लिप हैं, हम पर्दाफाश करेंगे कि किस प्रकार हमारे आंदोलन को बदनाम करने की साजिश रची गयी। आपको बता दें कि दिल्ली में मंगलवार को ट्रैक्टर परेड के दौरान हुई हिंसा में 300 पुलिस कर्मियों के घायल होने के बाद इस मामले में दर्ज की गई प्राथमिकी में राकेश टिकैत, योगेंद्र यादव, दर्शन पाल और गुरनाम सिंह चढ़ूनी समेत 37 किसान नेताओं के नाम हैं। वहीं दो किसान संघों ने कृषि कानूनों के खिलाफ प्रदर्शन से बुधवार को अलग होने का फैसला किया। दिल्ली पुलिस ने कहा कि 22 प्राथमिकी दर्ज की गई हैं और करीब 200 लोगों को हिरासत में लिया गया है। हिंसा में शामिल लोगों की पहचान के लिये विभिन्न वीडियो और सीसीटीवी फुटेज देखी जा रही हैं और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। पुलिस ने कहा कि समयपुर बादली में दर्ज प्राथमिकी में टिकैत, यादव, दर्शन पाल और चढ़ूनी समेत 37 किसान नेताओं के नाम हैं और उनकी भूमिका की जांच की जाएगी।

सुशील मोदी का अजीबोगरीब बयान- महंगे सूट-बूट वाले किसान कर रहे आंदोलन, कोई गरीब नहीं

■ पटना/ब्यूरो

किसान आंदोलन को लेकर जारी विवाद के बीच बुधवार को बीजेपी नेता सुशील मोदी का अजीबोगरीब बयान सामने आया है. उन्होंने ने बिहार की राजधानी पटना में आयोजित पार्टी के एक कार्यक्रम के दौरान कहा कि किसान आंदोलन के नाम पर दिल्ली की बॉर्डर पर पिछले

दो महीनों से जो धरना चल रहा है, उसमें कोई गरीब किसान आपको दिखाई नहीं पड़ेगा। सूट बूट वाले, जूता, जीन्स, महंगी घड़ी पहने जिनके घरों में एयर कंडीशनर है, जो बड़ी-बड़ी गाड़ियों पर चलते हैं वो लोग धरने पर बैठे हैं।

केवल एक राज्य के किसान कर रहे विरोध

उन्होंने कहा कि अगर ये तीन कृषि कानून किसान विरोधी होता तो बिहार-यूपी के किसान सड़कों पर होते. यहां के किसानों को किसी ने सड़कों पर नहीं देखा. सिर्फ एक राज्य के किसान इस आंदोलन के अंदर सरकार का विरोध कर रहे हैं।

विपक्ष के कार्यक्रम को नकार देंगे किसान

सुशील मोदी ने कहा कि मैं देश भर के किसानों को खास करके बिहार के किसानों को धन्यवाद देना चाहूंगा क्योंकि उन्होंने आरजेडी-कांग्रेस के भारतबंद को नकार दिया। ऐसे में जिस तरह से उन्होंने भारत बंद को नकारा है उसी तरह से वे 30 तारीख को होने वाली मानव श्रृंखला को नकार देगी।

इस कार्यक्रम में आरजेडी के कार्यकर्ता हो सकते हैं, लेकिन बिहार का कोई किसान उसमें शामिल नहीं होगा क्योंकि बिहार का किसान नरेंद्र मोदी के साथ है।

केवल बीजेपी कर सकती है जनता का विकास

सुशील मोदी ने कहा कि कोई पार्टी अगर भारत की जनता के विकास के लिए काम कर सकती है तो वो भारतीय जनता पार्टी है। और उस नेता का नाम नरेंद्र दामोदर दास मोदी है। नरेंद्र मोदी की सरकार गरीबों के प्रति समर्पित है। किसानों के लिए काम करने वाली सरकार है।

किसान आंदोलन वापस ले लें किसान

दिल्ली हिंसा की निंदा करते हुए उन्होंने कहा कि कल जिस तरह से किसान आंदोलन के नाम पर दिल्ली में हिंसा हुई है। कोई भी सरकार उसे बर्दाश्त नहीं कर सकती है. जिस प्रकार से कल हिंसा हुई है, दिल्ली के लाल किले पर केवल तिरंगा फहरेगा, कोई दूसरा झंडा लाल किले पर नहीं फहर सकता है।

लेकिन आंदोलनकारियों ने कल तिरंगे की बजाय दूसरा झंडा फहराने की कोशिश की है। उन्होंने कहा कि इस आंदोलन के पीछे कौन लोग है ये बताने की जरूरत नहीं है।

मैं फिर एक बार किसान नेताओं से अग्रह करना चाहता हूँ कि अभी भी समय है किसान आंदोलन को वापस ले लीजिए इससे बढ़िया नेता इससे बढ़िया सरकार आपको दिल्ली में कभी नहीं मिलेगी।

दिल्ली पुलिस कमिश्नर का बड़ा बयान, कहा- किसानों ने उपद्रवी तत्वों को किया आगे

■ नई दिल्ली/ब्यूरो

गणतंत्र दिवस के मौके पर दिल्ली में किसानों के ट्रैक्टर परेड में जिस तरीके से उत्पाद और हिंसा हुई उसके बाद से लगातार पुलिस की आलोचना हो रही है। यह बात बार-बार कही जा रही है कि जब पुलिस को पहले से ही इस

तरीके की खबर थी, फिर चूक कहां हुई जिससे कि हिंसा की नौबत आई। इसको लेकर आज दिल्ली पुलिस की ओर से प्रेस कॉन्फ्रेंस किया गया। दिल्ली पुलिस आयुक्त एसएन श्रीवास्तव ने कहा कि हमें 2 जनवरी को ज्ञात हुआ था कि 26 को ट्रैक्टर रैली निकाला जाएगा। हमने किसानों से कुंडली, मानेसर, पलवल मार्ग पर ट्रैक्टर मार्च निकालने का आग्रह भी किया था। लेकिन किसान दिल्ली में ही ट्रैक्टर रैली निकालने पर अडिग रहें। श्रीवास्तव ने आगे कहा कि दिल्ली के लोगों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए हमने ट्रैक्टर परेड के लिए कुछ नियम और शर्तें बनाई। हमें किसानों को लिखित रूप में दिया कि रैली दोपहर 12:00 बजे से शाम 5:00 बजे तक ही हो सकेगा इसका नेतृत्व किसान नेताओं को करना था। पुलिस कमिश्नर ने यह भी कहा कि हमने लिखित में दिया था कि 5000 से अधिक ट्रैक्टर रैली में शामिल नहीं हो सकते और उनके पास कोई हथियार भी नहीं होने चाहिए। परेड शांतिपूर्वक हो सके इसके लिए हमने कई बार किसान संगठनों से बातचीत भी की। लेकिन 25 जनवरी को यह बात पता चली कि अब किसान नेता अपनी बात नहीं रख रहे हैं। उन्होंने उग्रवादी तत्वों को सामने किया जो कि भड़काऊ भाषण देने के इरादे से आए थे। 26 जनवरी को ट्रैक्टर रैली के दौरान हुई हिंसा में 394 पुलिसकर्मियों को चोटें लगी है। कुछ पुलिसकर्मी आईसीयू वार्ड में भी भर्ती हैं। दिल्ली पुलिस कमिश्नर ने कहा कि दिल्ली हिंसा में किसान नेता भी शामिल है।

ट्रैक्टर रैली के दौरान हिंसा के बाद चिल्ला बॉर्डर से हटे किसान, ऑल इंडिया किसान संघर्ष समिति ने भी खत्म किया आंदोलन

26 जनवरी को ट्रैक्टर परेड के दौरान हिंसा को लेकर गृहमंत्री अमित शाह के आवास पर उच्च स्तरीय बैठक हुई। उधर स्वराज इंडिया के अध्यक्ष और किसान आंदोलन में सक्रिय रहे योगेंद्र यादव समेत कई नेताओं के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। हिंसा के खिलाफ अब तक 22 एफ.आई.आर. दर्ज की जा चुकी है।

नगर-निगम जालंधर स्वच्छ भारत मिशन को सफल करने में हो रहा है विफल

■ जालंधर ब्रीज की विशेष रिपोर्ट

केन्द्र सरकार द्वारा स्वच्छ सर्वेक्षण सर्वे 2021 देश के सभी हिस्सों में जनवरी 4 से लेकर 31 जनवरी तक चलाया जा रहा है जिसके तहत स्वच्छ शहर को रैंकिंग उसकी स्वछता के अनुसार दी जाती है और इस अभियान में आने वाले खर्च को उस शहर की रैंकिंग के हिसाब से सरकार द्वारा दिया जाता है पिछले कुछ सालों से मध्य प्रदेश के इंदौर शहर को देश का सबसे स्वच्छ शहर होने के कारण चार बार नंबर 1 घोषित किया जा चुका है लेकिन जालंधर शहर जो पंजाब का प्रमुख शहर है जिसको स्वच्छ रखने के लिए नगर-निगम द्वारा कई तरह के अभियान चलाये जाते है जैसे की लोगों को गिला कूड़ा और सूखा कूड़ा सेग्रीगेट करके उसकी खाद बनाई जा सके इस बारे लोगों को प्रत्सोहित किया जा रहा है लेकिन कही न कही यह सारे किये जा रहे प्रयास विफल साबित हो रहे है।

दिनांक 2 अक्टूबर 2014 को प्रधानमंत्री मोदी द्वारा महात्मा गाँधी के जन्म दिवस पर इस अभियान की शुरूवात की गई थी और हर साल इस दिन नगर-निगम द्वारा स्वच्छता के नाम पर कई प्रोग्राम और पैसा खर्च किया जाता है पर असल में कुछ दिन बाद आपको शहर में कई जगह गंदगी और कूड़े के ढेर देखने को मिलेंगे ऐसा ही वाक्या जालंधर शहर वर्कशॉप चौंक से जाती गाजी गुल्ला रोड नजदीक कृष्ण मुरारी मंदिर के साथ लगते डंप में हर दिन देखने को मिलेगा वहां रहते आस-पास के लोग अपने घर या दुकान का सारा कूड़ा इस डंप पर फेंक जाते है लेकिन

वर्कशॉप चौंक से जाती गाजी गुल्ला रोड पर लगे कूड़े के ढेर।

नगर निगम के अधिकारियों का ध्यान सिर्फ जो एरिया पहले से ही स्वच्छ है उन्हें और स्वच्छ करने में लगा रहता है जिस कारण कई दिनों से वहां पड़े कूड़े की लिफ्टिंग नहीं हो पाती जिसके तहत सारा कूड़ा सड़क के बीच तक पहुँच जाता है।

क्यों नहीं नगर- निगम के अधिकारियों द्वारा शहर में स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत हर दिन कूड़े को उठाया जाता है और जो रैग पिक्केर्स और सैनिटेशन वर्कर्स इस मुहिम से जुड़े है उन्हें अच्छे से ट्रेनिंग क्यों नहीं दी जाती है और शहर में जितने भी कूड़े के डंप है उन्हें अच्छे से कवर क्यों नहीं किया जाता ताकि वहां पड़ा कूड़ा किसी दिन लिफ्टिंग न होने की वजह से बीच सड़क में न पहुँच सके तभी जाकर जालंधर भी कभी स्वच्छ भारत मिशन में देश के पहले 5 स्वच्छ शहरों में आ सकेगा और नगर-निगम जालंधर की छवि पर भी लोगों का अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

दखल

सेंसेक्स की उड़ान के सुखद संकेत

कोरोना काल के बाद मंद पड़ी अर्थव्यवस्था के बीच शेयर बाजार का उड़ान भरना हर किसी को आश्चर्य में डालने वाला है। कहा जा रहा है कि यह सट्टेबाजी का परिणाम है, तमाम विशेषज्ञ इसी पहलू पर चर्चा कर रहे हैं। भारत सहित दुनिया भर के तमाम अर्थव्यवस्थाएं आर्थिक, स्वास्थ्य तथा सामाजिक उथलपुथल का दौर से गुजर रहीं हैं, ऐसे में शेयर बाजार की तेजी पर बहुत भरोसा न कर पाना स्वाभाविक भी है।

भारत के शेयर बाजार में तेजी के साथ मार्च-अप्रैल के निम्नतर स्तर से दो गुना ऊंची छलांग भारतीय अर्थव्यवस्था में उम्मीदों के साथ ही प्रश्न भी खड़ा करती है। बाम्बे स्टाक एक्सचेंज के संवेदी सूचकांक द्वारा 50 हजार एवं राष्ट्रीय स्टाक एक्सचेंज के संवेदी सूचकांक (निफ्टी) द्वारा 14 हजार 700 के आंकड़े के पार निकलने को जहां भारतीय अर्थव्यवस्था लिए अच्छा संकेत माना जा रहा है। वहीं इसने तमाम आर्थिक जानकारों को चौंकाया भी है। इसकी वजह भी है कि तमाम विपरीत परिस्थियों एवं वैश्विक आर्थिक मंदी के बावजूद शेयर बाजार अपने उच्चतम स्तर तक कैसे पहुंचा? कहीं दिख रही तेजी महज सट्टेबाजी का नतीजा तो नहीं है? भारत सहित दुनिया भर के तमाम अर्थव्यवस्थाएं आर्थिक, स्वास्थ्य तथा सामाजिक उथलपुथल का दौर से गुजर रहीं हैं, ऐसे में शेयर बाजार की तेजी पर बहुत भरोसा न कर पाना स्वाभाविक भी है। परंतु शेयर बाजार के संकेतों को महज सट्टेबाजी कह कर खारिज कर देना शायद उचित नहीं होगा। अतः शेयर बाजार के इशारे को समझना जरूरी है। पिछले डेढ़ वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था की अंदरूनी ताकत एवं क्षमता को लगातार आजमाया गया।

पहले से ही दुश्वारियां पैदा कर रही मंदी को गहराते हुए राजनीतिक घटनाक्रम के अंतर्गत देशव्यापी प्रदर्शनों, फिर सीमाओं की आजाद भारत की सबसे गम्भीर चुनौतियां, बाद में वैश्विक महामारी ने आर्थिक तबाही के भरसक प्रयास किए। मंजर ऐसा था कि लगा जिंदगी थम गई, कारोबार तबाह हो गए, करोड़ों परिवारों के सामने रोजी-रोटी का संकट खड़ा हो गया। शहर के शहर कामगारों के अप्रवासन से वीरान दिखने लगे। वैश्विक मंदी से आयी आर्थिक गिरावट ने उद्योग-धंधों को दिशाहीन बना दिया। आर्थिक हताशा की यह परछाई शेयर बाजार पर न पड़े, नामुमकिन था। शेयर बाजार धड़ाम से गिरकर अपने निचली सतह पर आ गया। परन्तु इससे भी चमत्कारिक रही इसकी रिकवरी। बाजार के जानकार इसकी दिशा तथा रफ्तार से अचंभित हैं। शेयर बाजार में ऐतिहासिक चमत्कारिक उछाल को समझने के लिए संवेदी सूचकांक की यात्रा जो वर्ष 1979 में सौ के सूचकांक से होती हुई वर्ष 1990 में दस गुना बढ़कर एक हजार के पार पहुंची। इस सफर में 2006 में 10 हजार तथा वर्ष 2008 में 20 हजार पार करते हुए 2019 में 40 हजार का सूचकांक पार किया।

परंतु आश्चर्यजनक है कि वैश्विक महामारी से आई मंदी ने मार्च 2020 में तो सूचकांक गर्त में गिरकर 25,639 तक पहुंच गया। शेयर बाजार का उतार-चढ़ाव तो इसके चाल एवं चरित्र को दर्शाता है। परंतु मार्च-अप्रैल 2020 की गिरावट ने सारे अनुमान तथा विश्वास ही तोड़कर रख दिया था। उम्मीद भी कहीं नजर नहीं आ रही थी, ऐसे में शेयर मार्केट की यह पलट चाल तमाम जानकारों की समझ से परे हैं। अब हालात यह हैं कि हम समझ नहीं पा रहे कि इस तेजी वाले बाजार के संकेत क्या हैं एवं इससे कैसे निपटा जाए? इस तेजी की मजेदार बात यह है कि इस मामले में वर्ष 2020 की छाया तक नहीं है। यदि बारीकी से गौर करें तो हम पाते हैं कि शेयर बाजार की यह तेजी महज सट्टेबाजी कतई नहीं है। भारतीय अर्थव्यवस्था गंभीर संकट में भी निवेशकों की उम्मीदों पर चट्टान की तरह टिकी रही। छोटे निवेशकों सहित घरेलू और विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा शेयर बाजार में शुद्ध निवेश बना रहा।

अर्थव्यवस्था के बुरे दौर में भी मई-जून माह में संस्थागत घरेलू तथा विदेशी निवेशकों ने शेयर बाजार को ताकत दी। जून से दिसंबर के बीच देश में आने वाला ऐसा निवेश 140 हजार करोड़ रुपए का रहा। विदेशी निवेशकों ने न केवल भारत में निवेश किया बल्कि पूर्वी एशिया के बाजारों में भी उन्होंने निवेश किया। मार्च से दिसंबर तक की अवधि में भारतीय पूंजी बाजार में संस्थागत निवेशकों ने 59,0000 करोड़ रुपये की राशि निवेश की। प्रमुख बात यह रही कि बाजार में इस तेजी के भागीदार अधिकतर सेक्टर बने। आईटी, बैंकिंग, ट्रांसपोर्ट, मेटल, फार्मा, एफएमसीजी जैसे शेयरों की तेजी ने बाजार को व्यापक आधार तथा मजबूती दी। ब्लूचिप कंपनियों के शेयरों ने इस तेजी की अगुआई की तो पीछे से सहयोग कर मझोले तथा छोटे शेयरों ने भारतीय शेयर बाजार को दुनिया के सबसे आकर्षक शेयर बाजारों में से एक बना दिया। रिलायन्स द्वारा अनेक विदेशी कंपनियों के संविलियन तथा एकीकरण की वजह से इसके शेयरों में जबरदस्त तेजी एवं बाजार पूंजीकरण की तेजी ने दुनिया में अपनी धाक जमाई। प्रश्न यह है कि निवेशकों ने इतना अधिक निवेश क्यों किया? ऐसे में शेयर कीमतों में तेजी क्यों आई? सवाल यह भी है कि वह कौन सा सुखद भविष्य है जिसका संकेत बाजार कर रहा है? प्रश्न यह है कि ऐसा क्या घटित हुआ जिसे लेकर हम आशान्वित हैं?

इस बात को हम भारतीय अर्थव्यवस्था की अंदरूनी मजबूती की बुनियाद पर समझना होगा। शेयर बाजार वस्तुतः वृहद आर्थिक माहौल तथा अर्थव्यवस्था की उम्मीदों से प्रभावित होते हैं साथ ही इसका आईना भी होते हैं। महामारी के कारण मार्च से मई तक आर्थिक हालात बहुत ही खराब रहे। पहले तिमाही में अर्थव्यवस्था में 23.9 फीसदी तथा दूसरी तिमाही में 7.5 फीसदी गिरावट दर्ज की गई। अतः इस छमाही गिरावट ने निर्माण तथा सेवा क्षेत्र को कमजोर करते हुए वित्तीय वर्ष 2020-21 में भारत की जीडीपी में 7.7 फीसदी गिरने के अनुमान दिए। परन्तु मई माह से ही भारतीय अर्थव्यवस्था के सूचकों ने रफ्तार के साथ-साथ दिशा भी बदली। कृषि क्षेत्र पूरी दमदारी से संकट के समय सहारा बनकर उभरा। रबी की बुआई के आकड़े वर्ष 2021 में रिकार्ड से भी अधिक कृषि उत्पादन के संकेत दे रहे हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था, कृषि उत्पाद निर्यात तथा खाद्य प्रसंस्करण उद्योग अर्थव्यवस्था की बुनियाद को मजबूत कर रहे हैं। भारतीय उद्यमों ने श्रम लागतों सहित अन्य लागतों में मितव्ययिता बरतते हुए, अपने को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्द्धी साबित किया। बेरोजगारी के मोर्चे पर जून माह के अंत तक महामारी की पूर्व अवस्था पर लगभग आ गये। दिसंबर माह के रिकार्ड जीसटी संग्रहण ने व्यापार तथा उद्योगों की सोच को प्रकट कर दिया है। एमएसएमई सेक्टर अर्थव्यवस्था का प्रमुख अंग बनने को तत्पर है। भारत की फार्मा कंपनियों की शोहरत दुनिया भर में महामारी के दौरान बढ़ी। कोरोना टीका की खोज तथा इसके उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभाते हुए, भारत आज दुनिया के सबसे बड़े टीकाकरण का लक्ष्य साधने का तत्पर है।

दीर्घकालीन लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए इसी संकट के दौरान श्रम सुधार,कृषि सुधार, एसएसएमई नीति में परिवर्तन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति जैसे निर्णय भारत के संकल्प को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित कर रहे हैं। विकट परिस्थितियों में लिए गए निर्णय बढ़ते आत्मविश्वास के प्रतीक बन रहे हैं। आज भारतीय अर्थव्यवस्था तमाम तालाबंदी तथा प्रतिबंधों से मुक्त होकर आगे बढ़ने को तैयार है। सेंसेक्स की उड़ान अर्थव्यवस्था के बढ़ते हौसले के साथ-साथ बेहतर भविष्य का इशारा अवश्य कर रही है। परंतु शेयर बाजार के संकेतों को पूरी हकीकत मान लेना कतई उचित नहीं होगा। कोरोना वैक्सीन जरूर आ चुकी है, परन्तु महामारी संकट के बादल अभी पूरी तरह से छटें नहीं है। कारोबार चल जरूर पड़े हैं, परंतु रफ्तार पकड़ना अभी बाकी है। अर्थव्यवस्था में खपत में अभी भी कमी है। बगैर खपत बढ़ाए, मंदी से निजात पाना मुश्किल होगा। उम्मीद है कि आने वाला बजट चुनौती तो है ही परंतु भारतीय अर्थव्यवस्था के सपनों को नई उड़ान देने का अवसर भी प्रदान करेगा।

विचार

सवालों के घेरे में तेल की कीमतें

देश में पेट्रोल और डीजल के दाम लगातार बढ़ रहे हैं। यह पहले से समस्या झेल रही जनता पर नाजायज बोझ की तरह है। सवाल यह है कि जब वैश्विक बाजार में क्रूड के दामों में उछान नहीं आ रहा है तो फिर तेल कंपनियां दाम में इजाफा क्यों करती जा रही हैं।

देश में पेट्रोल और डीजल के दाम शनिवार को अपने नए सर्वकालिक उच्चस्तर पर नजर आए। राजस्थान की बात करें तो यहां पेट्रोल की कीमत सौ रुपए पहुंच गई है। श्रीगंगानजर में पेट्रोल के दाम 97.76 रुपए प्रति लीटर हो गए हैं जबकि एक्स्ट्रा प्रीमियम ग्राहकों को 101.51 रुपए में उपलब्ध हो रहा है। यह देश भर में सर्वाधिक है। पिछले कुछ सालों से पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कुछ दिनों तक भी स्थिरता बनी रह जाती है तो उसे किसी बड़ी राहत की तरह देखा जाने लगता है। लेकिन आम लोगों की जरूरतों के मद्देनजर देखें तो फिलहाल इस राहत में कोई स्थिरता नहीं बन पा रही है। बीते करीब एक महीने तक पेट्रोल और डीजल के दामों में इजाफा नहीं किया गया तो ऐसा लगा कि समूचे देश में महामारी के दौर में बिगड़ी आर्थिक हालत में इससे थोड़ी सुविधा होगी। लेकिन अब पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी से एक बार फिर लोगों के माथे पर चिंता की लकीरें खिंच गई हैं।

दरअसल, पेट्रोल और डीजल के दाम में स्थिरता किसी बीते जमाने की बात हो चुकी है। कभी अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के मूल्यों में तेजी तो कभी उत्पाद शुल्क में इजाफे के नाम पर आए दिन इसमें बढ़ोतरी होती रहती है। यह किसी से छिपा नहीं है कि इसका असर केवल वाहनों में खपत के खर्च में इजाफे पर या इस ईंधन से चालित उद्योगों या संयंत्रों पर नहीं पड़ता, बल्कि इसका सीधा प्रभाव समूचे बाजार पर पड़ता है। डीजल से चलने वाली और खासकर माल ढुलाई वाली गाड़ियों में सामान एक से दूसरी जगह लाने या ले जाने में ज्यादा खर्च होता है तो उसके असर में वस्तुओं की कीमत में बढ़ोतरी होती है। कुछ समय पहले आम उपयोग की वस्तुओं के अलावा खाद्य पदार्थों और खासतौर पर सब्जियों की कीमतों में जिस तरह की तेजी देखी गई, वह अप्रत्याशित थी। हालत यह रही कि जो आलू गरीब तबकों की थाली का सहारा रहा है, उसकी कीमत भी लोगों की पहुंच से बाहर हो गई थी।

हाल में इसमें कुछ राहत देखी जा रही है, लेकिन अब पेट्रोल और डीजल की कीमतों में इजाफे ने अगर फिर रफ्तार पकड़ी तो वह राहत महज तात्कालिक साबित हो सकती है। यह सच है कि बाजार अब तक सामान्य गति नहीं पकड़ सका है। इसकी मुख्य वजह यह है कि इस बीच जितनी बड़ी तादाद में लोगों को रोजी-रोजगार से वंचित होना पड़ा, बड़े पैमाने पर व्यावसायिक गतिविधियां ठप्प पड़ी रहीं, उसमें आबादी के एक बड़े हिस्से की आमदनी या तो खत्म हो गई या फिर उसमें भारी कमी आई। इसका सीधा असर लोगों की क्रय शक्ति पर पड़ा और बाजार खुलने के बावजूद उनके भीतर खरीदारी को लेकर उदासीनता छाई रही। स्वाभाविक ही अलग-अलग मदों में सरकार की आय में भी कमी आई। अब अगर सरकार को लगता है कि इसकी भरपाई वह आम लोगों पर बोझ डाल कर लेगी तो इसे कितना उचित कहा जाएगा!

सेना में महिलाओं के लिए अवसर

सशस्त्र बलों में पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है और आगे उनकी भूमिका को बढ़ाना सरकार की प्राथमिकता है। महिलाएं आज कई नए मोर्चों का नेतृत्व कर रही हैं, जो कभी महिलाओं के लिए खोले भी नहीं गए थे। महिलाओं में सृजन, पोषण और परिवर्तन की क्षमता होती है। महिलाओं के उत्थान से ही समाज का विकास हो सकता है। सेना में भी यही बातें मुफीद साबित हो सकती हैं।

वैसे तो, भारतीय रक्षा बलों में महिलाओं का प्रवेश ब्रिटिश भारत के समय से ही अलग-अलग स्तर पर रहा है, उनकी भूमिका नर्सिंग और चिकित्सा अधिकारियों से संबंधित ज्यादा थी या तैनाती के दौरान सैनिकों, परिवार और जनता की देखभाल करने की जिम्मेदारी होती थी। हालांकि, शारीरिक विशेषताओं व मातृत्व को लेकर भारतीय सशस्त्र बलों के कुछ वर्गों की चिंताओं के कारण ही महिलाओं को समान अधिकार नहीं मिले थे। अब सरकार ने महिलाओं को भारतीय रक्षा बलों के गौरवान्वित और आवश्यक सदस्यों के रूप में मान्यता दी है और सामर्थ्य, जो उनके भीतर मौजूद होती है। इस प्रकार से पिछले छह वर्षों में सरकार ने भारतीय रक्षा बलों में महिलाओं को ज्यादा अवसर देने के साथ-साथ महिलाओं और पुरुषों के लिए सेवा की शर्तों में समानता लाने के लिए कई कदम उठाए हैं।

आज भारतीय रक्षा बलों के भीतर महिलाएं काफी सशक्त हैं, चाहे वह भारतीय थल सेना हो, भारतीय नौसेना या फिर भारतीय वायु सेना। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के शब्दों में केंद्र सरकार का यह दृष्टिकोण स्पष्ट होता है, सरकार हमारे सशस्त्र बलों में स्त्री शक्ति को मजबूत करने के लिए काम कर रही है और हम इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रतिबद्ध हैं। स्वतंत्रता मिलने के बाद, साल 1992 में महिला विशेष प्रवेश योजना (डब्ल्यूएसईएस) के माध्यम से भारतीय सेना में महिला अधिकारियों की भर्ती शुरू हुई। फरवरी 2019 में, भारतीय सेना ने आठ वर्गों में महिला अधिकारियों को स्थायी कमीशन प्रदान किया, जो हैं सिग्नल्स इंजीनियर, आर्मी एविएशन, आर्मी एयर डिफेंस, इलेक्ट्रॉनिक्स और मैकेनिकल इंजीनियर, आर्मी सर्विस कोर, आर्मी ऑर्डिनेंस कोर और इंटेलिजेंस। इससे पहले जेएजी और एईसी स्ट्रीमों के लिए 2008 में मंजूरी दी गई थी।

सरकार ने यह भी सुनिश्चित किया है कि महिलाओं अधिकारियों और उनके पुरुष समकक्षों के लिए सेवा की अलग-अलग शर्तें हटा दी जाएं। भारतीय सेना में महिलाएं आगे बढ़कर नेतृत्व कर रही हैं। यहां तक कि भारतीय नौसना में, 2008 से ही शिक्षा शाखा, कानून व नौसेना कंस्ट्रक्टर्स कैडर्स में महिलाओं के लिए स्थायी आयोग को मंजूरी दे दी गई थी, पर अदालतों में कुछ मुकदमों के कारण इसे अक्टूबर 2020 में लागू किया जा सका। इसके परिणामस्वरूप, पहली बार 41 महिलाओं को योग्यता के आधार पर स्थायी कमीशन प्रदान किया गया है। वास्तव में, भारतीय नौसेना में स्थायी कमीशन अब व्यावहारिक रूप से सभी शाखाओं के लिए उपलब्ध है। न केवल स्थायी कमीशन बल्कि सरकार ने महिला अधिकारियों के लिए अवसरों को भी बढ़ाया है जैसे- दिसंबर 2019 में डोर्नियर एयरक्राफ्ट के लिए नौसेना पायलट के तौर पर पहली महिला अधिकारी का चयन हुआ, सितंबर 2020 में पहली बार सी किंग हेलिकॉप्टर्स में महिला पर्यवेक्षक अधिकारियों को शामिल किया गया, नौसना के जहाजों पर सेवा देने के लिए चार महिला अधिकारियों को तैनात किया गया, पहली बार रिमोटली पायलटेड एयरक्राफ्ट के लिए किसी महिला अधिकारी को नियुक्त किया गया और नविका सागर परिक्रमा, पहली ऐसी परियोजना, जिसमें भारतीय नौसेना की महिला अधिकारियों की एक टीम ने 2017-18 में भारत नौसेना की नौका आईएनएसवी तारिनी से दुनिया का भ्रमण किया। अभियान ने नौसेना में नारी शक्ति का प्रदर्शन किया।

भारतीय वायु सेना में महिला अधिकारियों का पहला बैच 1993 में शामिल किया गया था। परिवहन और हेलिकॉप्टर स्ट्रीमों में महिला पायलटों का पहला बैच दिसंबर 1994 में भर्ती किया गया। हालांकि भारतीय वायु सेना ने महिलाओं के लिए सभी शाखाओं को साल 2016 में खोला। इसके परिणामस्वरूप, भारत को जून 2016 में पहली महिला फाइटर पायलट मिली। सितंबर 2020 तक भारतीय वायु सेना में वर्ष 1875 महिला अधिकारी हैं, जिनमें 10 फाइटर पायलट और 18 नेविगेटर शामिल हैं। भारतीय वायु सेना में कई महिलाओं ने अपनी उपलब्धियों से देश को गौरवान्वित किया है। 29 मई 2019 को फ्लाइट लेफ्टिनेंट भावना कांत दिन और रात में ऑपरेशन करने वालीं पहली महिला फाइटर बनीं। सारंग फॉर्मेशन ऐरोबैटिक डिस्प्ले टीम में पहली महिला पायलट के तौर पर फ्लाइट लेफ्टिनेंट दीपिका मिश्रा शामिल हुईं। मई 2019 में, फ्लाइट लेफ्टिनेंट पारुल भारद्वाज, फ्लाइंग ऑफिसर अमन निधि और फ्लाइट लेफ्टिनेंट हीना जायसवाल भारतीय वायु सेना का विमान उड़ाने वाली पहली सभी महिला क्रू बनीं।

फाइटर कंट्रोलर के तौर पर स्क्वाड्रन लीडर मिंटी अग्रवाल को 2019 में कश्मीर के आसमान में दुश्मन की हरकत को नाकाम करने के लिए युद्ध सेवा पदक प्रदान किया गया। विंग कमांडर आशा ज्योतिर्मय के पास देश में सबसे ज्यादा पैरा जंप का रिकॉर्ड है। सरकार ने 2017 में सैनिक स्कूल में लड़कियों के लिए प्रवेश शुरू किया। सैनिक स्कूल, छिंगछिप मिजोरम पहला सैनिक स्कूल बना, जहां शैक्षणिक सत्र 2018-19 के लिए लड़कियों को प्रवेश दिया गया। बालिका कैडेटों ने सक्रिय रूप से सभी गतिविधियों में हिस्सा लिया, चाहे वह खेल हो या अकादमिक और उन्होंने सभी गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। पांच अन्य स्कूलों, जिनमें सैनिक स्कूल बीजापुर और सैनिक स्कूल कोडागु, कर्नाटक में; महाराष्ट्र में सैनिक स्कूल चंद्रपुर; उत्तराखंड में सैनिक स्कूल घोड़ाखाल और आंध्र प्रदेश में सैनिक स्कूल कलिकिरी को शैक्षणिक सत्र 2020-21 और बाकी सैनिक स्कूलों को शैक्षणिक सत्र 2021-22 से लड़कियों को प्रवेश देने के लिए कहा गया था। सरकार के इन कदमों के परिणामस्वरूप, भारतीय रक्षा बलों में महिला अधिकारियों को लेकर लैंगिक पूर्वाग्रह समाप्त हो रहा है। आज ज्यादा महिलाएं रक्षा बलों में शामिल हो रही हैं और देश की सेवा कर रही हैं और देश को गौरवान्वित कर रही हैं।

इजराइल, जर्मनी, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में युद्धक भूमिकाओं में महिला सैनिकों के उदाहरण हैं। हमारे यहां यह लैंगिक समानता पेशेवर मानकों की स्थापना और बिना किसी पूर्वाग्रह के उनका पालन करके हासिल की जा सकती है। महिलाओं को शामिल करने की रूपरेखा को एक नीति में शामिल किया जाना चाहिए। जर्मनी, ताइवान और न्यूजीलैंड ऐसे देश हैं जिनकी महिलाएं अपनी सरकारें चला रही हैं। ये तीन अलग-अलग महाद्वीपों में स्थित हैं, तीनों देशों ने अपने पड़ोसियों की तुलना में महामारी को बेहतर ढंग से प्रबंधित किया है। कहा जाता है कि महिला नेता संकट में अपने पुरुष समकक्षों की तुलना में अधिक प्रभावी हैं। हम कह सकते है कि अगर महिलाओं को मौका मिले तो वे अपनी श्रेष्ठता को बखूबी साबित कर सकती है।

एक ओर जहां भारतीय वायुसेना में महिलाएं लड़ाकू पायलट बन चुकी हैं, वहीं सीमा सुरक्षा बल का महिला दस्ता पूरी जांबाजी के साथ सीमाओं की चौकसी कर रहा है। आज अगर महिलाएं लड़ाकू विमानों से मिसाइलें गिरा सकती हैं तो उनमें बंदूक, तोप और टैंक चलाने की भी पूरी सामर्थ्य है। जरूरत है देश की बहादुर बेटियों को सेना के द्वार खोल कर अवसर प्रदान करने की। उन्हें अब बंदिशों में रखना ठीक नहीं होगा।

तेल कंपनियां रोज दाम बढ़ा रही हैं और सरकार मूकदर्शक बनी है। ऐसा देश में पहली बार हो रहा है। मोदी सरकार को अब जनता की फिक्र नहीं रह गई है।

मनीष तिवारी, कांग्रेस नेता

तेल कंपनियां पेट्रोल-डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी कर अपना खजाना भरने में लगी हैं और केंद्र सरकार दूसरे कामों में लगी है। अब और कितने अच्छे दिन आएंगे।

अखिलेश यादव, सपा अध्यक्ष

सत्यार्थ

आजाद की सत्यनिष्ठा

उन दिनों चंद्रशेखर आजाद अपनी खराब आर्थिक स्थिति के कारण झांसी स्थित एक कंपनी में मोटरगाड़ी चलाकर गुजर-बसर कर रहे थे। प्रतिकूल परिस्थितियों के उस दौर में उन्हें चने खाकर अपनी भूख शांत करने का इंतजाम करना पड़ता था। एक दिन उनके पास सिर्फ एक इकन्नी ही बची थी। उन्होंने दिनभर कुछ भी नहीं खाया था। वे पूरे दिन खाली पेट मोटरगाड़ी चलाते रहे, जिससे शाम तक भूख से व्याकुल हो गए। तभी एक जगह उन्हें चने बेचने वाला दिखा। आजाद उससे इकन्नी के भुने हुए चने ले आए। जब वे चने खा रहे थे, तो उनमें से अचानक एक इकन्नी और निकल आई। यह देख वे चकित रह गए। एक बार तो उन का मन डोल गया। सोचा कि इससे कल का काम भी चल जाएगा, पर तभी वे एकदम गंभीर हो गए। उन्होंने अपने विवेक को जागृत किया और यह सोचने लगे कि यह इकन्नी मेरी कैसे हो सकती है? इस इकन्नी को मैंने अपने पुरुषार्थ से तो अर्जित किया नहीं है। लगता है, यह भूल से मेरे पास आ गई है। चने खाकर चंद्रशेखर आजाद ने एक लोटा पानी पिया और फिर वह चने बेचने वाले के पास गए और बोले-क्यों भाई, तुमने मुझे इकन्नी के चने दिए और एक इकन्नी भी चनों में डाल दी। यदि ऐसा करोगे तो क्या कमाओगे? चने बेचने वाला वह व्यक्ति जब तक कुछ समझ पाता, चंद्रशेखर उसे वह इकन्नी देकर वापस हो लिए। अब चने बेचने वाला कभी हथेली पर रखी इकन्नी को देखता, तो कभी सड़क पर जाते हुए उस नौजवान को। मन ही मन में वह सत्यनिष्ठ चंद्रशेखर आजाद की प्रशंसा कर रहा था। वाकई, सदाचार के संवाहक क्रांतिवीर चंद्रशेखर आजाद देश के नौजवानों के हृदयों पर प्रेरणास्रोत बनकर सदैव अंकित रहेंगे।

किसान आंदोलन

▸▸ लाल किले की प्राचीर पर पहुंचे प्रदर्शनकारियों ने अपने साथ लाए दो झंडे लगा दिए।

गणतंत्र पर लोकतंत्र शर्मसार, हावी हुआ

किसान आंदोलन में बवाल

72वें गणतंत्र दिवस पर धब्बा | **लाल किले के प्राचीर पर खालसा झंडा फहराने को अपनी जीत बता रहा है किसानों का एक दल**

नई दिल्ली, (ब्यूरो): देश का 72वां गणतंत्र दिवस पर मंगलवार को भारत के इतिहास में काले पन्ने के रूप में दर्ज हो गया। इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ है कि किसी ने लाल किले के प्राचीर पर राष्ट्रीय ध्वज के स्थान पर धार्मिक झंडे को लहरा दिया। इसे पंजाब से आए किसान संगठन का बड़ा वर्ग अपनी जीत मान रहा है। उनका कहना है कि लाल किले पर संगठन का झंडा लहराना देना ही हमारी जीत का निशान है। आज तक देश में इतने बड़े-बड़े आंदोलन हुए लेकिन कभी भी ऐसा नहीं हुआ कि लाल किले के प्राचीर पर तिरंगे की जगह किसी संगठन या धार्मिक झंडे को लहरा दिया गया हो। इस घटना ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया है। पुलिस-प्रशासन इस घटना से सन्न रह गई। दिल्ली पुलिस को इस बात की बिल्कुल उम्मीद नहीं थी कि किसान ऐसा भी कर सकते हैं, यह अलग बात है कि किसान नेता इसे किसानों द्वारा उठाया कदम नहीं बता रहे हैं बल्कि घुसपैठियों द्वारा की गई हरकत बता रहे हैं साथ ही इसकी निंदा भी कर रहे हैं। लेकिन जो हुआ वास्तव में भारत के लोकतंत्र पर हमले जैसा है। अब पुलिस व सरकार यह कवायद में लगी है कि आखिर ऐसा कैसे हो गया? किसानों के बीच पनप रही इस मंशा के पीछे सूत्रधार कौन थे? केन्द्र सरकार के नुमाइंदे लगातार इस बात को कह रहे थे कि किसानों की आड़ में खालिस्तानी अपना वर्चस्व बढ़ा रहे हैं। मंगलवार को ट्रैक्टर रैली के दौरान जो हुआ, उनकी आशंकाएं सही साबित हो गईं। दिल्ली के गाजीपुर, मुकरबा चौक, नांगलोई, टिकरी बॉर्डर, सिंघु बार्डर से टैक्टर लेकर निकले किसान पूरी तरह से निरंकुश हो गए। जो रूट पुलिस द्वारा निर्धारित किए गए थे, सब ध्वस्त कर दिए गए और लाल किले की ओर कूच कर गए। पुलिस की सुरक्षा को ट्रैक्टरों से रौंदते हुए तथा दिल्ली के कई इलाकों में बवाल करते हुए प्रदर्शनकारी किसान लाल किले में घुस गए। लाल किले के अंदर तोड़फोड़ करते हुए सैकड़ों किसान प्राचीर तक पहुंच गए और यहां ठीक उस जगह पर निशान साहिब और किसान संगठनों के झंडे लगा दिए हैं जहां, हर साल स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री तिरंगा फहराते हैं। हालांकि, कुछ ही देर में पुलिसकर्मियों ने इन झंडों को वहां से हटा दिया। इस दरौन नीचे खड़े प्रदर्शनकारी हूटिंग करते रहे। इसके बाद कई प्रदर्शनकारी गुंबदों पर चढ़ गए और वहां भी झंडे लगा दिए।

बाद में बढ़ती पुलिस व्यवस्था को देखते हुए किसान वहां से पीछे भी हट गए, अब दिल्ली में सुरक्षा व्यवस्था को सख्त कर दिया गया है, लेकिन इससे पहले दिल्ली में किसानों के रूप में उपद्रवियों ने जो तांडव मचाया है, उसने आज के गणतंत्र दिवस पर धब्बा लगा दिया। किसान नेताओं द्वारा किए जा रहे बड़े-बड़े वादे-दावे सब रखे के रखे रह गए।

▸▸ लाल किले की गुंबद पर भी लगाए अपने झंडे।

हे राम...

अहिंसा के पुजारी के सामने हिंसा

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को अहिंसा का पुजारी कहा जाता है, लेकिन मंगलवार को उग्र हिंसा करने वाले कथित किसानों ने बापू का मान तक न रखा। जिस आईटीओ चौराहे पर उग्र प्रदर्शन हो रहा था। किसान ट्रैक्टर लेकर पुलिसकर्मियों को रास्ते से हटाने की चेष्टा कर रहे थे, उसी चौराहे के पास पुराने पुलिस मुख्यालय की दीवार पर बनी महात्मा गांधी की विशाल तस्वीर बयान कर रही थी कि बापू के देश में लोग किस प्रकार हिंसा पर उतारू हो गए। जिस देश को लोकतंत्र शासन के लिए जाना जाता है, उसकी प्रजा लोकतंत्र की धज्जियां उड़ा रही थी। महात्मा गांधी अहिंसा के प्रबल समर्थक थे, मंगलवार को हुई हिंसा देखकर बापू के अहिंसा पथ पर चलने वालों को बड़ी तकलीफ हुई होगी। शायद इसलिए गायक प्रदीप ने बरसों पहले लिखा था कि **देख तेरे इंसान की हालत क्या हो गई भगवान, कितना बदल गया इंसान...।**

ये गुस्सा जायज नहीं...

▸▸ पुलिसकर्मी को पीटते कथित किसान।

दीप सिद्धू ने लिया निशान साहिब का झंडा फहराने का जिम्मा

- **दीप सिद्धू ने निशान साहिब के साथ-साथ किसान संगठन का झंडा भी लगाया**

नई दिल्ली, ( ): लाल किले पर निशान साहिब का झंडा लगाने को लेकर दीप सिद्धू का सोशल मीडिया पर मंगलवार शाम को एक वीडियो वायरल हो रहा है। इसमें खुद सिद्धू ने दावा किया है कि लाल किले पर उन्होंने निशान साहिब का झंडा मंगलवार को फहराया है। बेरिकेड्स तोड़कर लाल किले पर जाकर कृषि कानूनों को लेकर एक सांकेतिक रोष, विरोध और प्रदर्शन दर्ज कराने के लिए वहां निशान साहिब भी लगाया, किसान झंडा भी लगाया और किसान-मजूदर एकता का नारा भी बुलंद किया। सोशल मीडिया पर सिद्धू ने इस प्रदर्शन को अपना लोकतांत्रिक अधिकार बताया है।

लोग दिखे खौफजदा

मेट्रो प्रभावित, कई लाइन रहीं बंद

नई दिल्ली, (ब्यूरो): ट्रैक्टर रैली में उग्र हुए किसानों को देखते हुए दिल्ली मेट्रो ने अपनी तीन-चार लाइन सहित कई मेट्रो स्टेशनों को बंद कर दिया। ग्रे लाइन, यलो लाइन, ग्रीन लाइन को बंद करना पड़ गया। हालत यह रही कि देर रात तक मेट्रो स्टेशन बंद और खुलते रहे। देर रात इंद्रलोक मेट्रो, जामा मस्जिद सहित कई स्टेशन को खोला गया, हालांकि कुछ देर बाद फिर से इसे बंद कर दिया गया। हालांकि शास्त्री नगर, सहित अन्य स्टेशनों को खोल दिया गया।

दुस्साहस... | **जिस तरह किसान मध्य दिल्ली में घुसे उसे देखकर ऐसा लगा कि ये सुनियोजित योजना थी**

26 जनवरी बनाम किसान आंदोलन का 62वां दिन

नई दिल्ली, (ब्यूरो) 26 जनवरी को किसान आंदोलन का 62वां दिन था, यूं भी यदि 26 के अंक को उलटा करें तो 62 हो जाता है। यह दिन इतिहास के काले अक्षरों में दर्ज हो गया। जिस दिन राजपथ पर तीनों सेना के जवान सुसज्जित हथियारों से अपने शौर्य का परिचय देते हैं, वहीं कुछ समय बाद ही कथित किसानों ने गणतंत्र दिवस के मायने ही बदल कर रख दिए। शायद यही कारण था कि शुरुआती दिनों में पुलिस और खुफिया एजेंसी किसी भी सूरत में 26 जनवरी पर किसानों के दिल्ली में प्रवेश करने की अनुमति नहीं देना चाहते थे, लेकिन केन्द्र सरकार और किसानों के कई दौर की वार्ता के बाद बनी सहमति के उपरांत बीते रविवार को किसानों को ट्रैक्टर रैली की मंजूरी दे दी गई, लेकिन तय शर्तों का पालन कथित किसानों द्वारा नहीं किया गया। इसके बाद जो कुछ भी राजधानी की सड़कों पर हुआ वह किसी से छिपा नहीं रह गया।

▸▸ नेशनल हाइवे-9 पर किसान और पुलिस के बीच टकराव।

दरअसल, 26 जनवरी को समूचा देश अपना 72वां गणतंत्र दिवस धूमधाम के साथ मना रहा था, लेकिन किसानों के रूप में छिपे कुछ शरारती तत्वों ने सभी सीमा और मर्यादाओं का उल्लंघन कर इस दिन की गरिमा को तार-तार कर दिया। वो दिल्ली पुलिस जिनके कंधों पर देश विरोधी ताकतों और विदेशी आतंकवाद का सामना करते हुए राष्ट्रीय पर्व को संपन्न कराने का दायित्व था, वहीं कुछ देर बाद राजधानी की सड़कों पर भीड़ तंत्र का तांडव शुरू हो गया और तत्काल पुलिस को उनका सामना करना पड़ा। कल तक देश के प्रति सम्मान और गणतंत्र की साख की दुहाई देने वाले किसान हजारों ट्रैक्टर लेकर दिल्ली की सीमा में घुसकर आईटीओ और लाल किला का रुख कर गए। सूत्रों की माने इनकी मंशा तो लुटियंस जोन में संसद, राष्ट्रपति भवन, प्रधानमंत्री आवास और गृहमंत्री आवास तक जाने की थी, लेकिन दिल्ली पुलिस के जवानों ने अपनी जान पर खेलकर इन्हें आईटीओ से आगे नहीं बढ़ने दिया। वहीं दिल्ली से सटे गाजीपुर, टिकरी और सिंघु बॉर्डर से राजधानी में घुसे किसानों ने ट्रैक्टर रैली के तय रूट का पालन नहीं किया।

एक किसान की मौत, 86 पुलिसकर्मी घायल

आईटीओ से लाल किले तक 15 कंपनी फोर्स तैनात की गई

▸▸ प्रदर्शनकारियों को रोकते पुलिसकर्मियों पर ट्रैक्टर चढ़ाता प्रदर्शनकारी।

गणतंत्र दिवस के मौके पर किसानों ने ट्रैक्टर रैली की आड़ में जो तांडव दिखाया। उसने राजधानी दिल्ली ही नहीं, बल्कि पूरे देश को शर्मसार कर दिया। किसानों ने जमकर वाहनों पर तोड़फोड़ की और पथराव में पुलिसकर्मी घायल हुए। जबकि एक किसान की मौत भी हो गई। वहीं खबर लिखे जाने तक पुलिस के मुताबिक करीब 86 पुलिसकर्मी घायल हुए हैं। एक पुलिसकर्मी की हालत नाजुक बनी हुई है। घायलों को अलग-अलग अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। हुड़दंग करते हुए किसानों ने कई दर्जन वाहनों पर तोड़फोड़ हुई है। जिसके चलते चार एफआईआर दर्ज की गईं हैं। वहीं आईटीओ से लाल किले तक अर्द्धसैनिक बलों की 15 कंपनियों को तैनात किया गया है। जो किसानों को इस ओर आने से रोक रहे हैं।

▸▸ किसान की मौत पर विलाप।

गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान कैबिनेट मंत्री की तरफ से 145 कोविड योद्धाओं और गणमान्य व्यक्तियों को किया सम्मानित

■ जालंधर ब्रीज ब्यूरो

कैबिनेट मंत्री ने डिप्टी कमिश्नर घनश्याम थोरी, पुलिस कमिश्नर गुरप्रीत सिंह भुल्लर और एसएसपी सन्दीप कुमार गर्ग के साथ पूर्व सिविल सर्जन डा. गुरिन्दर कौर चावला, डा. तरसेम लाल, डा. सतीन्द्र कौर, डा. सुरिन्दर सिंह नंगल, डा. सुरजीत सिंह डा. परमजीत सिंह, मनप्रीत कौर, निशू, डा. कुलदीप सिंह, डा. सुखप्रीत कौर, डा. प्रभजोत कौर, प्रकाश गिल, सरबजीत लाल, अमनप्रीत, डा. महेश प्रभाकर, डा. कुलदीप राय, अमिता अग्रवाल, अवतार चंद, शिव कुमार, डा. ज्योति फोकेला, डा. अविनाश मंगोतरा, कुलदीप वर्मा, बलजीत कौर, डा. बलजिन्दर सिंह, हरदेव सिंह, अमित, डा. सतीन्द्र कौर, डा. विनीत दलाल, अमरजीत कौर, बलविन्दर सिंह, डा. भुपिन्दर कौर, डा. सुनील कुमार, गगनदीप, मनदीप सिंह, डा. रिचर्ड ओहरी, डा. राजदीप सिंह, रुपिन्दर सिंह, सन्दीप सिंह, डा. रीमा गोगिया, डा. प्रीतइन्दर सिंह, डा. ऋतु, सुखजीत कौर, जसबीर कौर, डा.अलका, मनप्रीत कौर, डा. ज्योति शरमा, डा. अतिन्दर पाल कौर, डा. चेतना, डा. कृति शर्मा, दीपक कुमार, इंस्पैक्टर राजविन्दर कौर, जोगिन्द्र सिंह, सुरिन्दर कुमार, मनदीप भारतीय, तीर्थ सिंह, कुलदीप सिंह, एएसआई दविन्दरपाल सिंह, ऐसआई बलजिन्दर सिंह, एसआई सुखदेव सिंह, एएसआई विनै कुमार, हैड कांस्टेबल कमलजीत सिंह, अरुना अरोड़ा, मनजीत कौर, आर. जे. गिराई, हरजिन्दर कौर, संजीव कुमार भसीण, राजू चौधरी, रजनी मल्होत्रा, प्रदीप कुमार, कमलजीत कल्याना, कुलदीप सिंह, जगदीश राम, रघबीर लाल, संजीवन राम, सुनील तलवार, खुशमनप्रीत कौर, प्रितपाल सिंह, स्रोत शेखर, सुरजीत लाल, सुखविन्दर कुमार, अमनप्रीत सिंह, हतिन्दर मल्होत्रा, गुरप्रीत सिंह, संजीव कुमार, सतवीर सिंह, वरिन्दर सिंह, प्रभु दयाल, सुनीता, रौशन लाल, रजिन्दर कौर मान, लखवीर सिंह समझी, डा. अमनदीप, हरी पाल, मनजीत लाली, रमनप्रीत कौर, रवीन्द्र सिंह, मनजीत सिंह, एएसआई सतपाल सिंह, एएसआई गुलज़ार मुहम्मद, अमनदीप सिंह, अली मुहम्मद ख़ान, लखविन्दर पाल सिंह गिल, ज़ीनत खहरा, कुलदीप कौर, दविन्दर सिंह, लुपिन्दर कुमार, सुमित शर्मा, कृतिका ठाकुर, डा. रोहत शरमा, डा. राजेश शर्मा, डा. वनीत, रमेश कुमार, अरुनजीत सिंह, सुमित दुग्गल, जतिन्दर कुमार, सतपाल, चरनजीत सिंह, हेमंत बुज़ुर्ग, निरमलजीत कौर, विनोद कुमार, हरप्रीत वालों, मुनीस दुग्गल, किरण कुमार शर्मा, लवलेश कुमार, राकेश कुमार, एएसआई रणजीतपाल, एएसआई प्रीतम सिंह, हैड कांस्टेबल मलकीत सिंह, विक्रांत राणा, डा. हरनीत भाटिया, डा. अंशुमन, दीपक कुमार, जसविन्दर सिंह, हरजीत कुमार, हरिदरशन सिंह, चंद्र शेखर, ओमेशवर नारायण, शरनजीत सिंह, धर्मपाल, एएसआई अशोक कुमार, लैफ. सोनीं महेन्दरू और उषा रानी का सम्मान किया।

मुख्यमंत्री द्वारा शानदार सेवाएं निभाने वाले अगली कतार के कोविड योद्धाओं और पुलिस जवानों का सम्मान

■ जालंधर ब्रीज ब्यूरो

72वें गणतंत्र दिवस के मौके पर पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिन्दर सिंह ने कोविड-19 के कठिन समय के दौरान बेहतरीन सेवाएं मुहैया करवाने के लिए 24 डॉक्टरों/ स्वास्थ्यकर्मियों को सम्मानित किया। इसी दौरान मुख्यमंत्री ने शानदार सेवाएं निभाने वाले छह पुलिस जवानों का सम्मान देने के अलावा झुग्गी-झोंपड़ी वालों के लिए शुरू की गई 'बसेरा' स्कीम के छह लाभार्थियों को सांकेतिक रूप में दस्तावेज़ सौंपे।

मुख्यमंत्री कार्यालय के एक प्रवक्ता ने बताया कि कैप्टन अमरिन्दर सिंह ने कोविड के चुनौतीपूर्ण समय में शानदार सेवाएं निभाने के लिए 24 डॉक्टरों/ स्वास्थ्यकर्मियों को कोरोना योद्धाओं के तौर पर सम्मानित किया। इनमें पूर्व सिविल सर्जन डॉ. हरीश मल्होत्रा, डॉ. आर.पी.एस. सिबिया, डॉ. विशाल चोपड़ा, डॉ. रुपिन्दर बख्शी, डॉ. जतिन्दर कांसल, डॉ. निधी शर्मा, डॉ. सुमित सिंह, डॉ. लवलीन भाटिया, डॉ. तृप्त कौर बिंद्रा, डॉ. बलविन्दर कौर रेखी, डॉ. हरजीत के. सिंह चावला, डॉ. अमनदीप सिंह बख्शी, डॉ. सचिन कौशल, डॉ. स्वाती कपूर, डॉ. सिमरजीत सिंह, डॉ. राजविन्दर सिंह, डॉ. कोमल परमार, मेल स्टाफ नर्स सपिन्दर पाल सिंह, आइसोलेशन वॉर्ड के इंचार्ज गुरकिरन, वॉर्ड अटेंडेंट जोगेशवर राय, स्टाफ नर्स सरबजीत कौर, ए.एन.एम. अनीता, वॉर्ड अटेंडेंट राज कुमार और फिज़ीओथैरेपिस्ट दीवान नसरूदीन शामिल हैं। इसी तरह कैप्टन अमरिन्दर सिंह ने ए.आई.जी. हरकमलप्रीत सिंह खख, डी.एस.पीज़ गुरजीत सिंह, गुरचरन सिंह और अरुण शर्मा, इंस्पेक्टर इन्दरजीत सिंह, ए.एस.आईज़ पवन कुमार और कश्मीर सिंह को चीफ़ मिनिस्टर मैडल फॉर आऊटस्टैंडिंग डिवोशन-टू-ड्यूटी (समर्पण भावना के साथ बेहतरीन ड्यूटी निभाने के लिए मुख्यमंत्री मैडल) से सम्मानित किया। इसी दौरान मुख्यमंत्री ने 'बसेरा' स्कीम के पहले पड़ाव में पटियाला से झुग्गी-झोंपड़ी वाले 335 व्यक्तियों को मालिकाना हक देने के लिए सांकेतिक रूप में छह लाभार्थियों को 'सन्नद' सौंपे, जिनमें सोहन लाल, जहान सिंह, खलील अहमद, राम लाल, नितेश कुमार और नरिन्दर शामिल हैं।

जालंधर में अब तक 6041 सेहत अधिकारियों का हुआ टीकाकरन - डॉ बलवंत सिंह

■ जालंधर/रवि

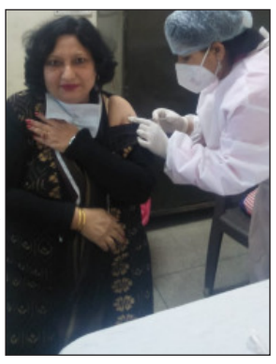

सेहत विभाग की तरफ से 16 जनवरी से कोरोना टीकाकरण की मुहिम चलाई जा रही है जिसके तहत सेहत अधिकारियों को कोरोना जैसी महामारी के प्रभाव से बचाने हेतु शहर में सरकारी और प्राइवेट सेहत संस्थाओं पर कोविड़ वैकसिन के टीके लगाए जा रहे है सिविल सर्जन डॉ.बलवंत सिंह ने बताया की जालंधर में बुधवार को सरकारी संस्थाएं जेसे ई.एस.आई जालंधर, सी.एच.सी आदमपुर, सी.एच.सी काला बकरा, और प्राइवेट में इनोसेंट हार्ट, ग्लोबल और गुलाब देवी हस्पताल जालंधर में कुल 6 जगहों पर वैक्सीनेशन की गई और कहा की बुधवार को कुल 6 जगहों पर 382 सेहत अधिकारियों को टीके लगाए गए जालंधर में अब तक 6041 सेहत अधिकारियों का हुआ टीकाकरण । इसी प्रकार डॉ. बलजीत कौर रूबी डी.डी.एच ओ ने भी ई.एस.आई हस्पताल जालंधर में कोरोना जैसी महामारी से बचाव के लिए टीका लगवाया और जानकारी देते हुए बताया की यह टीका कोरोना जैसी महामारी से बचाव के लिए है हमें इसे बिना किसी घबराहट के लगवाना चाहिए।

मान मैडिसिटी हस्पताल के डॉ जे.एस मान ने कोरोना का लगवाया टीका

■ जालंधर/रवि

कोरोना जैसी महामारी के बचाव के लिए आज बुधवार को अड्डा खंबरा (जालंधर) में पड़ते मान मेडिसिटी हस्पताल के डॉ जे.एस मान ने कोरोना का टीका लगवाया और जानकारी देते हुए बताया की यह टीका कोरोना जैसी महामारी से बचाव के लिए है हमें इसे बिना किसी घबराहट के लगवाना चाहिए और अफवाओं से दूर रहने की अपील की इसके साथ उन्होंने अपने पूरे हस्पताल के स्टाफ मैंबर्स को भी टीके लगवाए । इस मौके पर मौजूद डॉ. जे एस मान, डॉ.पूनम मान, डॉ. दलबीर सिंह, डॉ.आर.एस सैनी और सभी अस्पताल के स्टाफ मैंबर्स।

होशियारपुर विजीलैंस ब्यूरो द्वारा डीएसपी निरंजन सिंह की अगुवाई में होशियारपुर नगर-निगम में तैनात बिल्डिंग इंस्पैक्टर गौरव ठाकुर और आर्किटेक्ट दविन्द्र सिंह को शिकायतकर्ता बिल्ला दिलावर की शिकायत पर 5000 रुपये रिश्वत लेते हुए होशियारपुर विजीलैंस ने गिरफ्तार किया।

गणतंत्र दिवस पर दिल्ली में हिंसा देश का अपमान, मेरा सिर शर्म से झुक गया : अमरिंदर

■ चंडीगढ़/ब्यूरो

पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह ने बुधवार को कहा कि राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में गणतंत्र दिवस के मौके पर हुयी हिंसा , खास कर लाल किले में जो कुछ हुआ वह 'राष्ट्र का अपमान' है। हाथों में लाठी, कृपाण एवं तिरंगा लिये हजारों किसान ट्रैक्टरों पर सवार होकर विभिन्न स्थानों पर अवरोधकों को तोड़ते हुए राजधानी में प्रवेश किये जिनकी पुलिस के साथ झड़प हुयी। इनमें से लाल किले की घेराबंदी करने के लिये विभिन्न प्रवेश बिंदुओं से निकल पड़े। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस घटना ने देश को शर्मसार किया है और इससे किसान आंदोलन कमजोर हुआ है। उन्होंने हालांकि, यह स्पष्ट किया कि वह किसानों के साथ खड़े हैं क्योंकि केंद्र का कृषि कानून ''गलत'' और भारत की संघीय व्यवस्था के ''खिलाफ'' है।

कैप्टन ने कहा कि लाल किला स्वतंत्र भारत का प्रतीक है और देश की आजादी के लिये तथा इस ऐतिहासिक किले के शीर्ष पर राष्ट्रीय ध्वज को फहरते हुये देखने के लिये हजारों लोगों ने अपने जीवन का बलिदान दिया है। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी ने देश की आजादी के लिये अहिंसा का सहारा लिया। मुख्यमंत्री ने बयान जारी कर कहा, ''राष्ट्रीय राजधानी में कल (मंगलवार) जो कुछ हुआ उससे मेरा सिर शर्म से झुक गया है।'' उन्होंने कहा, ''जिसने भी ऐसा किया है उसने देश को शर्मसार किया है और दिल्ली पुलिस को मामले की जांच करनी चाहिये और कार्रवाई करनी चाहिये।'' उन्होने कहा कि केंद्र सरकार को इस मामले में इस बात की जांच करानी चाहिये कि कहीं इसमें कोई राजनीतिक दल अथवा कोई अन्य देश तो शामिल नहीं है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह भी यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिये कि किसी भी कृषक नेता को अनावश्यक परेशान नहीं किया जाये। कैप्टन ने कहा कि राज्य के युवाओं का भविष्य शांति में है और हालिया घटनाक्रमों ने प्रदेश में निवेश की गति को धीमा कर दिया है। मुख्यमंत्री ने वारदातों को आंजाम देने वालों के खिलाफ कार्रवाई किये जाने की मांग की, जिनके बारे में उन्होंने कहा कि वे किसान नहीं थे बल्कि युवाओं को गुमराह करने वाले थे।

कांग्रेस नेता ने कहा किलोगों की आवाज सुनने में अगर सरकार विफल रहती है तो ऐसी घटनायें होती रहेंगी। उन्होंने कहा किजनता के लिये और जनता द्वारा बनायी गयी सरकार जनता की इच्छा की अनदेखी नहीं कर सकती है। उन्होंने कहा कि भाजपा की अगुवाई वाली केंद्र की राजग सरकार के प्रदर्शन को ऐसे देश में अगले चुनाव में स्वीकार नहीं किया जा सकता है जहां 70 फीसदी जनता किसान हो। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी को स्थिरता एवं धर्मनिरपेक्षता के महत्व को महसूस करना चाहिये ,सभी अल्पसंख्यकों को शामिल करते हुए यह राष्ट्र के समावेशी विकास की कुंजी है और हिंदुत्व कार्ड खेलने से प्रगति नहीं होगी, सिंह ने कहा, ''कृषि कानून गलत है, यही कारण है कि हमने अपना कानून पारित किया है।'' कृषि को राज्य का विषय बताते हुये पंजाब के मुख्यमंत्री ने कहा, ''अध्यादेश लाने से पहले हमसे नहीं पूछा गया।'' पंजाब सरकार को इस मसले की पहले से जानकारी होने संबंधी आरोपों को सिरे से खारिज करते हुये सिंह ने कहा कि आम आदमी पार्टी झूठा फैला रही है।

रोहित चोटिल होने के कारण आस्ट्रेलियाई दौरे पर सीमित ओवर की श्रृंखला का हिस्सा नहीं हो पाये थे। उन्होंने कोविड-19 महामारी शुरू होने के बाद से कोई भी वनडे मैच नहीं खेला है।

SPORTS PLANET स्पोर्ट्स प्लैनट

आईसीसी वनडे रैंकिंग में कोहली और रोहित का जलवा बरकरार, जानिए कौन सी रैंक हासिल की

■ दुबई/ब्यूरो

भारतीय कप्तान विराट कोहली और सीनियर बल्लेबाज रोहित शर्मा ने आईसीसी (अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद) की वनडे बल्लेबाजों की रैंकिंग में क्रमशः पहला और दूसरा स्थान बरकरार रखा जबकि गेंदबाजों की सूची में तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह तीसरे स्थान पर बने हुए हैं। कोहली ने आस्ट्रेलिया के खिलाफ अपने अंतिम दो वनडे में 89 और 63 रन बनाये थे, उनके 870 अंक हैं। रोहित चोटिल होने के कारण आस्ट्रेलियाई दौरे पर सीमित ओवर की श्रृंखला का हिस्सा नहीं हो पाये थे। उन्होंने कोविड-19 महामारी शुरू होने के बाद से कोई भी वनडे मैच नहीं खेला है। लेकिन वह पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम (837) से पांच अंक ऊपर दूसरे स्थान पर ही बने हुए हैं।

न्यूजीलैंड के रॉस टेलर (818) और आस्ट्रेलिया के कप्तान आरोन फिंच (791) बल्लेबाजों की सूची में शीर्ष पांच के अन्य खिलाड़ी हैं। आयरलैंड के आल राउंडर पॉल स्टरलिंग को अफगानिस्तान के खिलाफ दूसरे और तीसरे मैच में शतकों की बदौलत 285 रन बनाकर अफगानिस्तान के हशमतुल्लाह शाहिदी, राशिद खान और जावेद अहमदी को भी रैंकिंग में फायदा हुआ। गेंदबाजों की सूची में बुमराह सर्वश्रेष्ठ भारतीय हैं, वह 700 अंक से तीसरे स्थान पर बने हुए हैं। न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज ट्रेंट बोल्ट (722) और अफगानिस्तान के स्पिनर मुजीब उर रहमान (701) शीर्ष दो स्थान पर काबिज हैं। बांग्लादेश के स्पिनर मेहदी हसन मिराज को नौ पायदान का फायदा हुआ और वह चौथे स्थान पर पहुंच गये हैं। वह हाल में समाप्त हुई वेस्टइंडीज के खिलाफ सबसे सफल गेंदबाज रहे थे, उन्होंने सात विकेट चटकाये थे। बांग्लादेश के तेज गेंदबाज मुस्तफिजुर रहमान भी 19वें से आठवें स्थान पर पहुंच गये। ताजा रैंकिंग में बांग्लादेश के अन्य खिलाड़ियों को भी लाभ हुआ है जिसमें शाकिब अल हसन और मुश्फिकर रहीम शामिल हैं। शाकिब गेंदबाजों में 15 पायदान की उछाल से 13वें स्थान पर जबकि रहीम बल्लेबाजों में एक पायदान के फायदे से 15वें स्थान पर पहुंच गये।

BCCI अध्यक्ष सौरव गांगुली की फिर तबियत बिगड़ी, अपोलो अस्पताल में कराया गया भर्ती

■ नई दिल्ली/ब्यूरो

बीसीसीआई अध्यक्ष सौरव गांगुली को अस्वस्थ होने की शिकायत के बाद बुधवार को कोलकाता के अपोलो अस्पताल ले जाया गया। भारत के पूर्व कप्तान हाल ही में सीने में दर्द की शिकायत के बाद अस्पताल में भर्ती हुए थे। बीसीसीआई अध्यक्ष सौरव गांगुली को अस्वस्थ होने की शिकायत के बाद बुधवार को कोलकाता के अपोलो अस्पताल ले जाया गया। भारत के पूर्व कप्तान हाल ही में सीने में दर्द की शिकायत के बाद अस्पताल में भर्ती हुए थे। उन्होंने एंजियोप्लास्टी करवाई थी और डॉक्टरों द्वारा 5 दिन लगातार उनकी सेहत का ध्यान रखा गया। अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद सौरव गांगुली ने कहा था मैं ठीक हूं।

सौरव गांगुली को शनिवार को तबियत ठीन नहीं लगने जैसा मेहसूस हुआ था। उन्हें कई तरह कोरोनरी धमनियों की परेशानियां हो रही थी।

गांगुली ने रविवार को कोविद -19 के लिए नकारात्मक परीक्षण किया था। सोमवार को एक 9-सदस्यीय मेडिकल टीम का गठन किया गया, जिसने तब तय किया कि गांगुली को अपनी कोरोनरी धमनियों में शेष रुकावटों के लिए किसी और एंजियोप्लास्टी की आवश्यकता नहीं है।

वुडलैंड्स अस्पताल के सीइओ डॉ. रूपाली बसु एमडी ने पहले इंडिया टुडे को बताया था कि बाकी दो अवरुद्ध धमनियों के पुनर्जीवित हो जाने के बाद गांगुली एक और 3-4 सप्ताह में अपने सामान्य जीवन को फिर से शुरू कर पाएंगे। मुझे नहीं लगता कि हम उनकी छोटी उम्र और एंजियोप्लास्टी की प्रगति के कारण इस समय सर्जरी पर विचार कर रहे हैं। लेकिन हम देश और दुनिया के सर्वश्रेष्ठ कार्डियोलॉजिस्टों से विशेषज्ञ राय ले रहे हैं और फिर हमें 2 अवरुद्ध धमनियों के साथ क्या करना है और एक बार ऐसा करने के बारे में कॉल करना होगा, एक और 3-4 सप्ताह का आराम और डॉ. बसु ने कहा था कि उन्हें अपने सक्रिय जीवन में वापस आना चाहिए और दादा के सक्रिय जीवन के लिए हम यही चाहते हैं।

भाजपा जालंधर (शहरी) ने राष्ट्रीय ध्वज फहरा कर मनाया गणतंत्र दिवस

■ जालंधर/रवि

भारतीय जनता पार्टी जिला जालंधर के के अध्यक्ष सुशील शर्मा की अध्यक्षता में 26 जनवरी को 72 वे गणतंत्र दिवस के उपलक्ष में राष्ट्रीय ध्वज फहराने का कार्यक्रम पार्टी कार्यालय सर्कुलर रोड नजदीक (शीतला माता मंदिर) में आयोजित किया गया जिसमें मुख्य रुप से उपस्थित मनोरंजन कालिया, भाजपा पंजाब प्रदेश के उपाध्यक्ष राकेश राठौर, कृष्णदेव भंडारी, विनोद शर्मा, मुख्य रूप से उपस्थित हुए जिसमें भारतीय जनता पार्टी जिला जालंधर शहरी के सभी कार्यकर्ताओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस मौके पर सुशील शर्मा ने सारे शहर वासियों को गणतंत्र दिवस की बधाई दी और कहा कि आज के शुभ दिन ही हमारे देश में एक बहुत ही बेहतरीन संविधान लागू हुआ था। हमें संविधान में दी गई जिम्मेदारियों को हमेशा ही एक अच्छे नागरिक की तरह निभाना चाहिए और अपना हर कदम सविधान के मुताबिक उठाना चाहिए। आज केंद्र सरकार संविधान के मुताबिक बहुत ही बेहतरीन काम कर रही है और भारत को पूरी दुनिया में नई ऊंचाइयों पर ले कर जा रही है। सुशील शर्मा ने कहा कि हम सब को भी एक अच्छे नागरिक की तरह केंद्र सरकार द्वारा बनाए गए कानून और नियमों को मानना चाहिए और देश की तरक्की में हाथ बटाना चाहिए।

सुशील शर्मा ने कहा कि संविधान लागू करते समय जो सपने हमारे देश के नागरिकों ने देखे थे वे सपने आज मोदी जी पूरे कर रहे हैं और देश को तरक्की की राह पर ले कर जा रहे हैं इस मौके पर मनोरंजन कालिया राकेश राठौर और कृष्ण देव भंडारी ने भी सारे शहर वासियों को गणतंत्र दिवस पर बधाई और शुभकामनाएं दी और कहा कि मोदी जी के नेतृत्व मे भारत नई ऊंचाइयों को छू रहा है और हम सब को भी मोदी जी का साथ देना चाहिए।

इस मौके पर उपस्थित रहे सन्नी शर्मा, सुभाष सूद, जिला महामंत्री, भगवंत प्रभाकर, अमित संधा,अनिल शर्मा काला, दविंदर कालिया, राजेश जैन, अमित भाटिया, रॉक्सी उप्पल, अजय चोपड़ा, करण सदी, गोपाल कृष्ण सोनी,भगत मनोहर लाल, मंडल अध्यक्ष हितेश सियाल, कुलवंत शर्मा, मोहिंदर कुमार, जगजीत सिंह ,दविंदर भारद्वाज, अमरजीत सिंह गोल्डी, शिव दर्शन अभी, हर्ष भारद्वाज, बलजीत प्रिंस,लखन गांधी, प्रवीण भारती, अनुज शारदा ,राजेश कुमार आर, के, दिनेश खन्ना, नरेश वालिया, तजिंदर वालिया, नितिन बहरोल, कुंवर सूद,अजय भारद्वाज, संदीप शर्मा, व अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

Printed, Published & Owner by ATUL SHARMA & Printed at SARANGLE PRINTERS, BASTI GUZAN JALANDHAR (PUNJAB) and Published from ATUL SHARMA, NN-453 GOPAL NAGAR JALANDHAR (PUNJAB)

Editor: ATUL SHARMA*

*Responsible for selection of News under the PRB ACT. PUNHIN/2019/77863, All Rights Reserved. Reproduction in whole or in part without permission is prohibited. All disputes shall be settled at Jalandhar jurisdiction only.